वैश्य समुदाय दृष्टिकोणात्मक संविधानः अधिकार, निर्देश, और कर्तव्य

Scan to view full document

दानवीर, शूरवीर, वैश्य शिरोमणि, भामाशाह जी

-लेखकः डॉ. पंकज कुमार, पटना, बिहार

पारिवारिक

ज्ञान और साक्षरता : वैश्य समाज अपने बच्चों को उच्च शिक्षा तक पहुँचाए और कम से कम स्नातक तक की पढ़ाई कराए।

वैवाहिक दृष्टिकोण : वैश्य समाज अपनी उपजातियों से ऊपर उठकर पूर्ण विलय के लिए हमेशा प्रयासरत रहेगा। नई पीढ़ी किसी भी उपजाति जो वैश्य समाज के अंतर्गत आती हो, में विवाह करने को प्रोत्साहित करेंगे।

व्यावसायिक

सामाजिक उत्थान : वैश्य समाज अपने व्यवसाय को बढ़ावा दे और अपने समुदाय के विकास में योगदान करे। वैश्य समाज के सदस्य किसी अन्य समाज के सदस्यों के साथ ईर्ष्या या व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा की भावना से टाँग खींचने का काम नहीं करेंगे। ऐसा करना वैश्य समाज में घोर अपराध और बहुत बड़ा पाप समझा जाएगा। वे अपने समाज के बंधुओं को व्यापार और व्यवसाय में हमेशा प्रोत्साहित करेंगे और एकजुट होकर मिलकर आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे।

सामाजिक

वैश्य की एकता और गर्व : अपनी जाति और उपजाति के गौरव और सम्मान को संजोते हुए, हमें गर्व से अपने आप को वैश्य कहकर संबोधित करना चाहिए। आत्मविश्वास के साथ कहें, ''हम सब वैश्य परिवार के गर्वित सदस्य हैं।''

सामाजिक उद्यमिता : वैश्य समाज सामाजिक उद्यमिता को बढ़ावा दे। वे ऐसे व्यवसाय शुरू करें जो न केवल लाभ कमाएँ बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का भी प्रयास करें।

राजनितीक

राजनीतिक भागीदारी : वैश्य समाज राजनीति में समानता और मजबूत भागीदारी के माध्यम से देश के विकास में योगदान दे। राजनीति में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए लगातार काम करना चाहिए।

जन-प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी : हर वैश्य समाज की गोष्ठी में आमंत्रित सभी जनप्रतिनिधि को उस गोष्ठी में शामिल होना आवश्यक होगा। अगर लगातार चुने हुए जनप्रतिनिधि इन गोष्ठियों में उपस्थित नहीं रहते हैं तो, समाज उनको पूर्ण रूप से बहिष्कार करेगा तथा अगले चुनाव में उनका किसी प्रकार का समर्थन नहीं करेगा।